एक इंजीनियर ने 5 साल पहले की थी बच्चों के लिए थिंकिंग प्रोसेस की खोज

लैब में चुनौतियों से लड़ना सीखेंगे बच्चे

देहरादून | कार्यालय संवाददाता

क्या आपको लगता है कि आजकल के बच्चे अच्छे मार्क्स तो लाते है पर जिंदगी की असल चुनौतियों के सामने वे हथियार डालने लगे हैं। बच्चों में समग्र सोच विकसित करने का काम अब थिंकिंग लैब करेगी। लैब में बच्चों को उनके द्वारा हासिल नॉलेज को व्यवहारिक परिस्थितियों में प्रभावी तरीके से इस्तेमाल करना सिखाया जाएगा। देश के कई मेट्रो सिटीज में कामयाबी के बाद थिंकिंग लैब की जल्द ही दून में भी शुरुआत होने जा रही है।

बच्चों के लिए इस थिंकिंग प्रोसेस टेक्निक की खोज एक इंजीनियर आशुतोष खुराना ने पांच साल पहले की थी। आशुतोष ने अपने सहकर्मियों की कार्यक्षमता और सफलता की दर में व्यापक अंतर को देखते हुए इसकी वजह समझने की कोशिश की। उन्होंने पाया कि यह सब कर्मचारियों से सोचने के तरीके पर निर्भर करता है। व्यस्क लोगों के सोचने के तरीके को बदलना बहुत मुश्किल है लिहाजा उन्होंने छोटे बच्चों की थिंकिंग प्रोसेस पर काम करना शुरू किया।

आशुतोष ने बताया कि इसी माह से दून के समर वैली स्कूल और सन वैली स्कूल में भी थिंकिंग लैब की स्थापना हो जाएगी। पिछले चार साल में नई दिल्ली, गुड़गांव, बंगलुरु, चंडीगढ़ और जयपुर में 10 हजार से ज्यादा बच्चे थिंकिंग लैब का फायदा उठा चुके हैं। समर वैली स्कूल के हेड अशोक वासु ने बताया, इस तकनीक के प्रभावशाली नतीजों को देखते हुए हमने अपने दो स्कूलों के सभी बच्चों के लिए इसे अपनाने का निर्णय लिया है।

तकनीक

- देश के कई मेट्रो सिटीज में काफी कामयाब रही है यह तकनीक
- दून के दो स्कूलों में इसी माह शुरू होने जा रही है थिंकिंग लैब

कैसे काम करती है लैब

नर्सरी से कक्षा 12 तक के बच्चों के लिए डिजाइन इस प्रोग्राम में उन्हें 20 थिंकिंग गेम दिए जाते हैं। इसके अलावा लैब में ऐसी परिस्थितियां बनाई जाती हैं जिनमें बच्चों को बहुत से संभावित सोल्यूशन में से बेस्ट चुनना होता है। गेम्स-सिचुएशन से बच्चों को उनके सोचने के तरीके से अवगत कराया जाता है और फिर उसमें संशोधन करना सिखाया जाता है। सभी संभावित विकल्पों के बारे में सोचकर निर्णय करने की क्षमता विकसित करते हुए बच्चों को इस प्रक्रिया को रीयल लाइफ में उतारना सिखाया जाता है।

यह गणित और विज्ञान जैसे विषयों को समझने की तकनीक नहीं बल्कि बच्चों की थिंकिंग प्रोसेस को इस तरह बदला जाता है ताकि वे प्रतिस्पर्धा का दबाव झेलने के साथ ही सामाजिक सरोकारों व भावनात्मक जिम्मेदारियों का भी अनुभव कर सकें।

आशुतोष खुराना, तकनीक के जनक